प्रश्न-अभ्यास : प्रश्नोत्तर

पाठ से :

1. दिए गए शब्दों को उपयुक्त स्थान पर भरिए ।

बूँदी, चित्तौड़, नकली, सैनिक, मंत्री

(क) राणा .....का रहने वाला था ।

(ख) बूँदी का .....किला बनाया जाने लगा ।

(ग) कुछ हाड़ा राजपूत राणा की सेना में .....थे ।

(घ) .....ने सुझाव दिया कि बूँदी का एक नकली किला बनाया जाए ।

(ङ) वीर कुंभा .....का सपूत था ।

उत्तर—(क) चित्तौड़ (ख) नकली (ग) सैनिक (घ) मंत्री (ङ) बूँदी

2. हाड़ा राजपूतों की राणा से नाराजगी का क्या कारण था?

उत्तर— राणा ने अपनी शक्ति और बलशाली सेना के घमंड में चूर होकर बूँदी पर आक्रमण कर दिया था । इसी कारण हाड़ा राजपूत राणा से नाराज थे ।

3. अपनी हार से क्रोधित हुए राणा ने अचानक क्या प्रतिज्ञा कर डाली ?

उत्तर—अपनी हार से क्रोधित हुए राणा ने अचानक प्रतिज्ञा कर डाली की जब तक वे बूँदी के किले पर अपना झंडा नहीं फहरा देंगे, तब तक वह एक बूँद पानी भी नहीं पीएँगे ।

4. राणा की प्रतिज्ञा तुरंत पूरी किए जाने में क्या कठिनाई थी ?

उत्तर—बूँदी छोटा-सा राज्य था, पर उसे चुटकियों में नहीं जीता जा सकता था । बूँदी के वासी, हाड़ा जाति के राजपूत परम वीर, और नितांत स्वाभिमानी थे । वे अपनी मातृभूमि की आन-बान के लिए हरदम मर-मिटने को तैयार रहते थे । इसी कारण बूँदी को जीतना इतनी जल्दी संभव न था और न ही कभी आसान होता । राणा की प्रतिज्ञा तुरंत पूरी किए जाने में यही कठिनाई थी ।

5. बूँदी का नकली किला क्यों बनाया गया ?

उत्तर— राणा ने प्रतिज्ञा कर बैठा था कि जब तक वह बूँदी के किले पर अपना झंडा नहीं फहरा लेता, तब तक वह पानी नहीं पीएगा । और बूँदी को जीतने के लिए पूरी तैयारी और युद्ध में काफी समय लगाना था । जबकि राणा को फौरन पानी पिलाना भी जरूरी था अन्यथा उसके प्राणों पर संकट खड़ा हो जाता । इसीलिए एक मंत्री ने एक उपाय सोचा कि बूँदी का नकली किला बनाकर राणा उसे नकली युद्ध में जीतकर उसपर अपना झंडा फहरा कर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण कर लें । फिर पूरी तैयारी करके असली बूँदी पर आंक्रमण किया जाय । इसी हेतु बूँदी का नकली किला बनाया गया ।

6. प्रस्तुत पाठ से हाड़ा कुंभा के किन-किन गुणों का पता चलता है ?

उत्तर—प्रस्तुत पाठ से पता चलता है कि हाड़ा कुंभा अत्यन्त वीर था । उसे अपनी मातृभूमि बूँदी से विशेष लगाव था। अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपनी जान दे देना उसके लिए चुटकी बजाने का सा काम था । वह अत्यंत आनी, परम देशभक्त और परम वीर था ।

पाठ के आगे

1. हाड़ा कुंभा की हार, राणा की जीत से शानदार थी । कैसे ?

उत्तर— हाड़ा कुंभ मात्र बीस-पच्चीस बूँदी के सैनिकों को साथ ले राणा के हजारों सैनिक के खिलाफ मोर्चा संभाल लिया था । जहाँ हाड़ा कुंभा नकली बूंदी के किले को अपनी मातृभूमि का प्रतीक मान उसकी आनबान की रक्षा के लिए अपने राजा के खिलाफ युद्ध करने को तत्पर हो गया था वहीं राणा एक नकली युद्ध से अपनी

प्रतिज्ञा पूर्ण करना चाहता था । इस युद्ध में राणा जीत तो गया पर हाड़ा कुंभा की हार, राणा की जीत से शानदार थी जो अपनी मातृभूमि की प्रतीक के आनबान की रक्षा के लिए भी मर मिटा ।

2. आप अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए क्या-क्या कर सकते हैं ।

उत्तर—हम अपनी मातृभूमि की रक्षा करने के लिए अपना सर्वस्व कुर्बान कर सकते हैं ।

3. हाड़ा कुंभा की किस बात ने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया और क्यों ?

उत्तर—अपनी मातृभूमि की आनबान के साथ-साथ उसके प्रतीक के भी आनबान के लिए मर-मिटने की अदम्य साहस जो हाड़ा कुंभा में थी उसने मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित किया । ऐसे वीर सपूतों के बल पर ही कोई देश या धरती गौरवान्वित होती है ।

4. अगर आपकी जमीन पर कोई बल पूर्वक एवं छलपूर्वक कब्जा करना चाहे तो इस समस्या का समाधान आप कैसे करेंगे ?

उत्तर—उस छली के खिलाफ अदालत में मुकदमा दर्ज करूँगा ।

5. अगले पृष्ठ पर बाक्स में दी गई कहानी को वार्तालाप के रूप में लिखिए ।

उत्तर—संकेत : स्वयं करें ।

व्याकरण

1. पाठ में प्रयुक्त जातिवाचक एवं व्यक्तिवाचक संज्ञाओं को छाँटकर लिखिए ।

उत्तर—पाठ में प्रयुक्त जातिवाचक संज्ञाएँ—मनुष्य पशु, पक्षी, राजपूत, हाड़ा, मंत्री, किला, अन्न, मैदान, सेना, सैनिक, कारीगर, तीर सेनापति आदि ।

पाठ में प्रयुक्त व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ—बूँदी, चित्तौड़, महाराणा, कुंभा ।

2. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

धूल चटाना, आग बबूला होना, आँखे लाल होना, लाशों पर से गुजरना, मुँह की खाना ।

उत्तर—धूल चटाना (पराजित करना)—उसने अपने दुश्मन को मार-मार कर धूल चाटने पर मजबूर कर दिया ।

आग बबूला होना (क्रोधित होना)—अपनी बात की अवज्ञा होते देख शिक्षक पूरी कक्षा पर आग बबूला हो गये ।

आँखे लाल होना (अधिक क्रोध करना)—अपने बेटे के कुकर्म की बात सुनकर पिता की आँखें लाल हो गयीं ।

लाशों पर से गुजरना (अत्यन्त निर्दयी होना)—तानाशाह लाशों पर से गुजरने के आदी होते हैं ।

मुँह की खाना (पराजित होना)—देशभक्तों के प्रबल प्रतिरोध के फलस्वरूप अत्याचारी देश की सेना को मुँह की खानी पड़ी ।